स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य

राष्ट्रीय वेबीनार विशेषांक

वै.धुंडी महाराज देगलुरकर महाविद्यालय, देगलुर

Azadi Ka Amrit Mahotsav

शोध-ऋतु

Open Or Transparent Peer Reviewed & Refereed Journal

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

ISSN-2454-6283 IMPACT FACTOR - (IIJIF-7.312)

14 sept.-2022

अतिथि सम्पादक
डॉ.अभिमन्यु पाटील,
डॉ.पुष्पा गायकवाड़

सम्पादक
डॉ.सुनील जाधव
तकनीकी सम्पादक
श्री.अनील जाधव

Web-www.shodhritu.com
Email-shodhritvu78@yahoo.com
9405384612

[illegible] मुंडा और आजादी का आंदोलन......49
—[illegible]......49
स्वाधीनता संग्राम और हिन्दी कविता......50
—डॉ. [illegible]......50
राष्ट्रकवि सोहनलाल द्विवेदी के 'जय भारत जय' काव्य संग्रह में व्यक्त स्वाधीनता की चेतना......52
—डॉ. [illegible]......52
जननायक क्रांतिकारक बिरसा मुंडा और स्वाधीनता संग्राम (विशेष संदर्भ 'जय बिरसा' खंड काव्य–जियालाल आर्य)......53
—प्रा. डॉ. [illegible]......53
राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन मे साहित्यकारों की भूमिका......56
—डॉ. [illegible]......56
स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता......58
—[illegible]......58
स्वाधीनता आंदोलन और हिन्दी साहित्य......60
—डॉ. [illegible]केर......60
द्विवेदी युगीन काव्य में गांधी चेतना......61
—प्रा. डॉ. [illegible] टाले......61
हिंदी गद्य एवं स्वाधीनता आंदोलन......63
—[illegible]......63
हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय भावना......64
—डॉ. [illegible] येडले......64
स्वाधीनता संग्राम और सुभद्रा कुमारी चौहान......66
—डॉ. [illegible] शास्त्री......66
माखनलाल चतुर्वेदी की रचनाओं में राष्ट्रीयता......68
—प्रा. डॉ. [illegible] पटेल......68
स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता......69
—डॉ. [illegible] भिमराव जाधव......69
मैथिलीशरण गुप्त जी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना......72
—प्रा. डॉ. [illegible] जगन्नाथ गायकवाड......72
प्रेमचंद की कहानियों में स्वाधीनता की झलक......74
—डॉ. [illegible] बोरकर......74

IMPACT- IIJIF-7.312, ISSN-2454-6283, 30 Oct-2022

य में हक दी./दे सकते हो तो गोली बंदूक दी।"
सके बारे में लिखा है –/"कुछ बात है कि हस्ती
।/सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा !!/यूनान
ट गए जहाँ से!/बाकी मगर है अब तक नामोनिशा

आधुनिक काव्यधारा:– केसरी नारायण शुक्ल पृ. 23 चन्द्र, भारत दुर्दशा 597–98 (3) डॉ आसिफसईद ा के स्वर 126 (4) सेट/नेट प्रतियोगिता साहित्य क तिवारी (5) बृहत साहित्यिक निबंध डॉ यश गुलाटी, –भारती, वर्तमान खंड– मैथिलीशरण गुप्त पृ. 10 (7) दी – गुगल से 8. नाटक चन्द्रगुप्त जयशंकर प्रसाद दिन पंत रचनावली 7 से 1 खंड)) राजकमल प्रकाशन दिन पंत (9) निराला – दिल्ली कविता (10) निराला जर्नल पृष्ठ 305 (11) विश्व आंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति त्र वर्ष अंक–3 जुलाई–2021 पृष्ठ- 21 (12) amarujala.com/kavyachetana/ram- -poems in page no. 05 (13) दिनकर का डॉ छोटेलाल दीक्षित, पृ. 64 (14) परशुराम की प्रतीक्षा दिनकर पृ. 25 (15) 'परशुराम की प्रतीक्षा' शीर्षक मर्द – रामधारी सिंह दिनकर पृ. 40

24.स्वाधीनता संग्राम और सुभद्रा कुमारी चौहान

–डॉ.विजयलक्ष्मी शास्त्री
सहा.प्राध्यापक–हिन्दी,
राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महा.अम्बिकापुर,–सरगुजा, छ.ग.

स्वाधीनता संग्राम भारतीय इतिहास का वह महत्वपूर्ण अध्याय है। जिसका प्रभाव देश की राजनीति,अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक जीवन पर तो परिलक्षित होता ही है, साथ ही साथ हिन्दी साहित्य पर भी इसका गहरा असर दिखाई पड़ता है। स्वाधीनता संग्राम से सम्बंधित सामग्री पुष्कल परिमाण में हिन्दी साहित्य में फैली हुई है। आधुनिक साहित्य में स्वाधीनता संग्राम को उपजीव्य बनाकर अत्यधिक परिमाण में साहित्य सृजन हुआ है। जिसमें कवितायें,कहानियां,नाटक उपन्यास आदि सभी कुछ हैं। स्वाधीनता को लेकर देश में व्याप्त उथल–पुथल को अपने काव्य का विषय बनाकर कवियों ने हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में दोहरे दायित्व का निर्वहन किया। कवि एक तरफ तो राष्ट्रीयता को अपनी कविता का विषय बनाकर राष्ट्रीय भावना को प्रबल कर रहे थे दूसरी तरफ भारत वासियों में राष्ट्रीय चेतना का संचार भी कर रहे थे। भारतेंदु हरिश्चंद्र, राधाचरण गोस्वामी,राधाकृष्णदास,मैथिलीशरण गुप्त,श्रीधर पाठक,रामनरेश त्रिपाठी,माखनलाल चतुर्वेदी,दिनकर,सुभद्रा कुमारी चौहान इत्यादि कवियों ने अपनी ओजपूर्ण वाणी में राष्ट्रीयता का संधान किया। सुभद्रा कुमारी चौहान आधुनिक काव्य की ऐसी कवियित्री थीं जो स्वयं को देश के लिए समर्पित कर चुकी थीं साथ ही उन्होंने अपनी ओजपूर्ण रचनाओं के माध्यम से स्वाधीनता आन्दोलन को तेज करने में अद्वितीय भूमिका का निर्वहन किया।उनके काव्य का प्रमुख प्रतिपाद्य ही राष्ट्रीयता है। डॉ.दुर्गेश नंदिनी ने 'क्रांति की गायिका:सुभद्रा कुमारी' शीर्षक लेख में लिखा है– "......सुभद्राजी ने भूतकाल के गौरव को भविष्य के सपनों के साथ जोड़ दिया। जिस प्रकार तुलसी का रामचरित मानस के सम्बन्ध में 'जेहि महूँ आदि,मध्य अवसाना,प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना' यह कथन चरितार्थ होता है, उसी प्रकार सुभद्राजी के आदि,मध्य व अंत में राष्ट्रीयता व्याप्त है।"[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान कवयित्री होने के साथ साथ वीर स्वतंत्रता सेनानी भी थीं। उन्होंने भारतीय स्वाधीनता संग्राम में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई। स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। उन्होंने स्वयं स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रीय रहते हुए अपनी लेखनी के माध्यम से राष्ट्रीय काव्यधारा को भी विकास के पथ पर अग्रसर कियाAआचार्य नंददुलारे बाजपेयी इस सन्दर्भ में कहते हैं – "राष्ट्रीय कवियों को पूरी सफलता तभी मिल सकती है जब वे राष्ट्रीय आन्दोलन में स्वयं सम्मिलित हों और उत्साहपूर्वक जनता को मुक्ति का पथ दिखलावें।"[2] सुभद्रा कुमारी चौहान प्रथम महिला कवि हैं जिन्होंने यह भूमिका बखूबी निभाई। उनके द्वारा रचित 'त्रिधारा' व 'मुकुल' काव्य संग्रह में संकलित कविताओं में राष्ट्रिय भावना से ओतप्रोत

तीखे स्वर प्रस्फुटित हुए हैं। जलियांवाला बाग हत्याकांड के कुछ वर्ष पश्चात उनके करूण भाव 'जलियांवाला बाग में बसंत' कविता में इस प्रकार व्यक्त हुए हैं – परिमल हीन पराग दाग सा बना पड़ा है,/हा! ये प्यारा बाग खून से सना पडा है।/ओ प्रिय ऋतुराज! किन्तु धीरे से आना,/यह है शोक– स्थान यहाँ मत शोर मचाना।/कुछ कलियाँ अधखिलीं यहाँ इसलिए चढ़ाना/करके उनकी याद अश्रु के ओस बहाना।/तड़प–तड़प कर वृद्ध मरे हैं गोली खाकर/शुष्क पुष्प कुछ वहीं गिरा देना तुम जाकर।[3]/ राष्ट्र कवि माखनलाल चतुर्वेदी कि पुष्प की अभिलाषा भी यही थी–मुझे तोड़ लेना वन माली!/उस पथ पर तुम देना फेंक,/मातृभूमि पर तुम शीश चढ़ाने/जिस पथ जावें वीर अनेक।

'झाँसी की रानी' कविता ने ब्रिटिश शासन को हिलाकर रख दिया। इस कविता के द्वारा कवयित्री ने महारानी लक्ष्मीबाई की वीरता और शौर्य की याद दिलाई। यह कविता वीर स्वतंत्रता सेनानियों में देश के प्रति अगाध प्रेम एवं अंग्रेजों के विरुद्ध क्रांति कि ज्वाला भड़काने का कार्य की। 'झाँसी की रानी' कविता पढ़ते हुए बराबर यह आभास होता है कि सन् उन्नीस सौ सत्तावन का यथार्थ दृश्य हमारे सम्मुख है–सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,/बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी,/गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,/दूर फिरंगी को करने कि सबने मन में ठानी थी।/चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी।[4] इस कविता ने पुरे भारत को झकझोर कर रख दिया। वीरों के रगों में उबल ला दिया। अब किसी भी कीमत पर देशवासियों को पराधीनता स्वीकार नहीं थी। महलों ने दी आग, झोपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,/यह स्वतंत्रता की चिंगारी अंतरतम में आई थी,/झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थी,/मेरठ,कानपुर,पटना ने भारी धूम मचाई थी।[5] लक्ष्मीबाई को श्रद्धांजलि अर्पित करती हुई कहती हैं – जाओ रानी याद रखेंगे ये भारतवासी,/यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतंत्रता अविनासी।[6]

सुभद्रा कुमारी चौहान में राष्ट्रीयता की भावना प्रबल थी। देश की पराधीनता और ब्रिटश अत्याचार ने उन्हें हिलाकर रख दिया था। वह भारतवर्ष की स्वतंत्रता हेतु दृढ़ थी। स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु राष्ट्रीय एकता व अखंडता की भावना का बल अनिवार्य शर्त है।कवयित्री 'राखी' के द्वारा राष्ट्र की एकता व अखंडता को और अधिक मजबूत करने का आह्वान करती हैं–भैया कृष्ण! भेजती हूँ मैं,/राखी अपनी, यह लो आज।/कई बार जिसको भेजा है,/सजा–सजाकर नूतन साज।/लो आओ, भुजदंड उठाओ,/इस राखी में बांध जाओ।/भारत भूमि की राजभूमि को,/एक बार फिर दिखलाओ।[7] सुभद्रा कुमारी चौहान खुद वीर स्वतंत्रता सेनानी थीं। उन्होंने अपनी लेखनी द्वारा देश के वीरों को स्वतंत्रता के मार्ग में स्वयं के उत्सर्ग हेतु प्रेरित करती हैं। वे 'राखी की चुनौती' देती हुई कहती हैं–आते हो भाई? पुनः पूछती हूँ–/कि माता के बंधन कि है लाज तुमको?/–तो बंदी बनो, देखो बंधन है कैसा,/चुनौती यह राखी की है आज तुमको।[8]

मध्यकालीन अध्यात्म और आधुनिक राष्ट्रीयता के अद्भुत संगम के द्वारा राष्ट्रीय चेतना का भाव परिलक्षित होता है। 'विजयादशमी' कविता में कवयित्री पराधीनता से छूटने की कामना करती हैं–रामचंद्र की विजय कथा/भेद बता आदर्श सखी।/पराधीनता से छूटे यह/प्यारा भारतवर्ष सखी।[9] कवयित्री असहयोग आन्दोलन में सक्रीय रहीं। वे लिखती है–छेड़ दिया सरगम रहेगी/हलचल आठों याम सखी!/असहयोग सर तान खड़ा है/नन्द का श्रीराम सखी![10] वह महात्मा गाँधी से प्रेरित होकर अहिंसा के मार्ग पर चलकर देश को स्वतंत्र करवाना चाहती थीं।उन्हें यह भय था कि देशवासी स्वतंत्रता प्राप्ति के मार्ग पर चलते हुए उन्मत्त होकर कहीं अत्याचार न कर डालें–है इतना उत्साह कि डर है, हम उन्मत्त न बन जावें,/है इतना विश्वास कि भय है हम गर्विष्ठ न कहलावें,/इतना बल है प्रबल कहीं हम अत्याचार न कर डालें,/यही सोच संकोच यही मर्यादा पार न कर डालें।"[11] परन्तु वे स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़ने के लिए आह्वान करती हैं– सबल पुरुष यदि भीरु बनें,/तो हमें दे वरदान सखी/अबलायें उठ पड़ें देश में/करें युद्ध घमासान सखी।[12] मातृभूमि के लिए सम्पूर्ण भूमंडल के उत्सर्ग का आह्वान करती हुई कहती हैं–जय स्वतन्त्रिणी भारत माँ।/यों कहकर मुकुट लगा दो।/हमें नहीं इस भूमंडल को,/माँ पर बलि–बलि जाने दो।[13] आजादी की लड़ाई को नये आयाम देने वाले महात्मा गाँधी व तिलक का प्रभाव कवयित्री पर था। गाँधी व तिलक का प्रभाव उनके काव्य में राष्ट्रीय चेतना बनकर प्रस्फुटित हुआ है– तिलक, लाजपत, गाँधी ने कितनी बार हुए ।/जेल गए जनता ने पूजा/संकट में अवतार हुए।[14] भारत माता को स्वतंत्र कराने के लिए देश के युवाओं में अपनी ओजस्वी के द्वारा कवयित्री नई शक्ति, नई स्फूर्ति व नई ऊर्जा का संचार करती हैं। हमारी स्वतंत्रता का प्रतीक 'तिरंगा' के प्रति उनकी ओजस्वी वाणी गुंजायमान हो उठती है। 'सेनानी के स्वागत' में लिखती हैं–रण का नाद सदा को/क्या अब रुक जायेगा ?/जिसको उच्च किए वही/क्या झंडा झुक जायेगा?/हैं संतप्त तदापि आशा से आज तुम्हारा/एक बार फिर कह दो/झंडा उंचा रहे हमारा।[15] 'झंडा के प्रति' सुभद्रा कुमारी चौहान की मधुर भावनाएं एवं उत्साह प्रकार व्यक्त होती हैं– आ स्वतंत्र प्यारे स्वदेश आ,/स्वागत करती तेरा ।/तुझे देखकर आज हो रहा,/दूना प्रमुदित मन मेरा।[16] कुमारी चौहान के काव्य में स्वतंत्रता की तीव्र अभिलाषा परिलक्षित होती है।उनकी लेखनी में ब्रिटिश शासन के प्रति घोर घृणा का भाव व्याप्त हुआ है। वह स्वयं स्वतन्त्रता आंदोलनों में भाग लेती हुई कई बार गयीं और अपनी कविताओं के द्वारा लोगों में स्वतंत्रता के लिए अलख जगाया ।अतीत का गौरव गान भी उनके काव्य में स्पष्ट रूप से व्याप्त हुआ है।त्याग, बलिदान और समर्पण के भाव तथा विद्रोह का स्वर उनकी लेखनी में सर्वत्र व्याप्त है। उन्होंने अपने काव्य के द्वारा जागरण का ऐसा अलख जगाया कि जनता हुंकार उठी।

डॉ.रामकुमार वर्मा ने 'मुकुल' कविता संग्रह की भूमिका में स्पष्ट बताया है कि "सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में विविधता होते हुए भी उनकी कविताएँ राष्ट्रीय हैं क्योंकि उनका जीवन ही राष्ट्रीय भावमय है। सच्चे अनुभवों ने उनकी इन कविताओं को अधिक स्पष्ट और हृदयग्राही बना दिया है.....इन्होंने अपनी राष्ट्रीय कविताओं में वीर भाव के साथ ही साथ भावुकता भी इस प्रकार भर दी है कि उन कविताओं का मूल्य वस्तुतः देश के मूल्य के बराबर हो जाता है।"[17]

सन्दर्भ सूची– (1)राजस्वी, एम.आई., राष्ट्र भक्त कवयित्री:सुभद्रा कुमारी चौहान, प्रभात प्रकाशन,सं.–2020,पृष्ठ–62.(2)दुबे, डॉ. उषा, देशभक्त सुभद्रा कुमारी चौहान, सृजन के सोपान, नमन प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2016,पृष्ठ-65.(3)hindi-kavita.com(4)hindi-kavita.com(5)hindi-kavita.com(6)hindi-kavita.com(7)hindi-kavita.com(8)उपाध्याय, राजेंद्र, जनमनमयी सुभद्रा कुमारी चौहान,परमेश्वरी प्रकाशन नई दिल्ली,सं–2020, पृष्ठ-73.(9)hindi-kavita.com(10)hindi-kavita.com(11)दुबे, डॉ. उषा, देशभक्त सुभद्रा कुमारी चौहान, सृजन के सोपान, नमन प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2016,पृष्ठ-69(12)hindi-kavita.com(13)hindi-kavita.com(14)सुभद्रा कुमारी चौहान, मुकुल तथा अन्य कविताएँ,हंस प्रकाशन,इलाहबाद,1980.(15) hindi-kavita.com(16)hindi-kavita.com(17)सुभद्रा कुमारी चौहान,भूमिका, डॉ.रामकुमार वर्मा,पृष्ठ–13, मुकुल तथा अन्य कविताएँ, हंस प्रकाशन,इलाहबाद,1980.

25.माखनलाल चतुर्वेदी की रचनाओं में राष्ट्रीयता

–प्रा.डॉ.माधव पाटील,
बी.रघुनाथ महाविद्यालय, परभणी

हिन्दी साहित्य में श्री माखनलाल चतुर्वेदी (सन 1889–1968 ई.) को मुर्धन्य कवि, लेखक और पत्रकार के रूप में जाना जाता है जिनकी रचनाएँ अत्यंत लोकप्रिय हैं। इनका जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में बाबई नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम नन्दलाल चतुर्वेदी था जो गाँव के प्राइमरी स्कूल में अध्यापक थे। प्राइमरी शिक्षा के बाद घर पर ही इन्होंने संस्कृत, बंगला, अंग्रेजी, गुजराती आदि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। इनका पारिवारिक वातावरण राधावल्लभी सम्प्रदाय के अनुयायी होने से धार्मिक था। दुसरी ओर गाँव, समाज आहे देश के तत्कालीन वातावरण ने इन्हें एक देशभक्त ओ क्रान्तिकारी बनाने में सहायता पहुँचाई। प्रारम्भ से ही देश की दशा के प्रति अत्यन्त जागरूक रहे ओ अपनी किशोरावस्था में उग्रवादी तिलक के अनुयायी बने। शिक्षा पूरी होते ही इन्होंने अध्यापन का कार्य प्रारम्भ किया।

श्री.माखनलाल चतुर्वेदी सरल भाषा और ओजपूर्ण भावनाओं के अनुठे हिंदी रचनाकार थे। प्रभा और कर्मवीर जैसे प्रतिष्ठत पत्रों के संपादक के रूप में इन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ जोरदार प्रचार किया और नई पीढी का आहवान किया कि वह गुलामी की जंजीरो को तोड़ करत बाहर आए। इसके लिये इन्हें अनेक बार ब्रिटिश साम्राज्य का कोपभाजन बनना पड़ा। व सच्चे देशप्रेमी थे और असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए जेल भी गए। इनकी कविताओं में देशप्रेम के साथ–साथ प्रकृति–प्रेम का भी चित्रण हुआ है।इनकी प्रमुख काव्यकृतियाँ है– हिमकिरीटनी, हिमतरंगिणी, माता, युगचरण, समर्पण, वेणु लो गूँज धरा आदि। इन सबके अतिरिक्त " कृष्णार्जुन युध्द" नामक नाटक, 'कला का अनुवाद' नामक कहानी–संग्रह जैसी कई अन्य रचनायें भी प्रकाशित की है।

इनकी अधिकांश रचनायें राष्ट्रीयता के ताने–बाने से बंधी हुई हैं। इनकी वाणी राष्ट्र के मर्म की वाणी है। चतुर्वेदी जी के काव्य में बलिदान और प्राणोत्सर्ग का आग्रह है। 'हिमकिरीटिनी' में युवकों को सन्देश देते हुये कहा है–" खुन हो जाये न ते देख, पानी,/मरण का त्योहार, जीवन की जवानी।" 18 फरवरी ,सन 1922 ई. में चतुर्वेदी जी ने बिलासपुर जे में 'पुष्प की अभिलाषा' नामक कविता लिखी, जिसमें उन्होंने मातृभमि की रक्षा के लिये भारतीयों से आत्म–समर्पण का आवाहन किया–" मुझे तोड लेना वनमाली!/उस पथ पर देना तुम फेंक,/मातृभूमि पर शीश चढाने/जिस पथ जावें वीर अनेक।" प्रस्तुत कविता में एक पुष्प भी देश के प्रति और देश के लिये लड़ रहे वीर के प्रति अपने बलिदान को तैयार है। पुष्प भी चाहता है कि जो वीर देश के लिये आत्मबलिदान को तैयार है तो क्यों न उसके मार्ग को ही